रिकॉर्ड :– प्रीतम आन मिलो..... 27/6/1965
ऊँ शान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं, बाप को प्रीतम के नाम से भी गाते हैं। अभी प्रीतम मोस्ट बिलवेड है। सारी दुनिया इनको याद करती है। प्यारे ते प्यारी वस्तु को सभी याद करते हैं। तुम बच्चे जानते हो सारी दुनिया के भक्त भगवान को, प्रीतम को याद करते हैं। ज़रूर एक दिन उनके पास जाना है। यह सारी दुनिया जानती है, प्रीतम एक है, जिसके साथ सभी भक्तों की प्रीत है। जानते भी हैं वह निराकार है; परन्तु वह मिले कैसे? हमको उनसे मिलने जाना है वा उनको हमसे मिलने आना है, यह कोई भी नहीं जानते। उनको आना तो ज़रूर है। अभी तुम समझते हो, हम प्रीतम के सन्मुख बैठे हैं। प्रीतम भी निराकार है। गाया भी हुआ है मैं प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा तुम बच्चों को अपना परिचय देता हूँ। ब्रह्मा को भी मिला, सरस्वती को भी मिला, बच्चों को भी मिला। प्रीतम के सन्मुख अब बैठे हो और सब उनको याद करते हैं। तुम जानते हो, इसी समय ही बाप आए हैं और परिचय दिया है। अभी तुम बच्चे रड़ी नहीं (मा)रेंगे कि प्रीतम आन मिलो। उनके पास जाए तो कोई नहीं सकता। भक्तों को कुछ भी पता नहीं। समझते हैं भगवान किस भी रूप में आए मिलेंगे। ब्र०वि०शं० भी दिखलाते हैं। बरोबर आते हैं ब्रह्मा के तन में। क्या करने आते हैं? आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना कर(ने)। हर एक बात समझने की हैं। हमको पढ़ाने वाला भी वह निराकार है। कहते हैं, और संग तोड़ एक मुझ संग जोड़ो। तुम सब आत्माओं को मेरे साथ चलना है। मेरे साथ वे ही चलेंगे जो पास विद ऑनर्स होंगे। नहीं तो कुछ न कुछ भोगने लिए अलग हो जावेंगे। तो सारी सृष्टि का प्रीतम एक है। याद भी एक को करते हैं। प्रीतम आए समझाते हैं, तुम भक्तिमार्ग में कितना भटक पड़े हो। विनाश काले (विपरी)त बुद्धि बन पड़े हो। तुम्हारी है विनाश काले प्रीत बुद्धि। अब तुम्हारी प्रीत किसके साथ है? ..... एक के और कोई साथ प्रीत न रखनी है। बाप मिल गया तो बाकी क्या! सब कामनाएँ ..... जाती हैं। सब दुखों से हम छूट जाते हैं। बच्चे निश्चय से जानते हैं, हमारा काम है बाप ..... अब बच्चों के सन्मुख आए हैं। तुम बच्चे हो, अगर भक्त कहें तो जैसे तुमको दुर्गति में देखते हैं। तुमको भक्त कहना जैसे गाली देना है। इसलिए बाप कहते हैं– हे बच्चे! यह भी तुम जानते हो ब्रह्मा द्वारा पढ़ाए रहे हैं। युगल बैठे हैं। अपना प्रवृत्तिमार्ग है ना। भारत में पवित्र प्रवृत्तिमार्ग था। पवित्र प्रवृत्तिमार्ग के महाराजा–महारानी भी थे। यथा महाराजा–महारानी तथा प्रजा, किसको भी समझाओ तो (मा)नेंगे। अभी वह राज्य नहीं है। अभी पुरानी दुनिया है, फिर नई दुनिया होने वाली है ज़रूर। तो बाप को ज़रूर यहाँ आना पड़े। आकर सिखलाना पड़े। बच्चे जानते हैं, जब वह प्रीतम मिला है तो फिर हमको कोई आस न रखनी है। कोई में बुद्धियोग न जाना चाहिए। और सब तरफ से बुद्धि का योग हटाते–2 एक को याद करना है तो अंत मते सो गति हो जावेगी। जब मनुष्य मरते हैं तो भी उनको कहते हैं राम जपो, राम नाम का दान देते हैं। अभी तो तुमको कुछ भी कहना नहीं है। तुम इन कहने से सब छूट पड़े। तुम्हारी आत्मा जान गई है कि हमारा बाबा हमको पढ़ाय रहे हैं। भगवानुवाच्य, कृष्ण तो हो न सके। इम्पॉसिबल है जो कृष्ण आकर राजयोग सिखलावे। मुख्य जो गीता है, जिसका सब भाषाओं में तरजमा(अनुवाद) किया हुआ है; क्योंकि उनको बहुत मानते हैं। भारत का शास्त्र एक ही गीता है; क्योंकि बाप ने भारत को स्वर्ग बनाया है, सहज राजयोग सिखलाया है। इसका शास्त्र कायम रखने लिए मनुष्यों ने गीता बनाई है। इनकी अभी दरकार नहीं है। भक्तिमार्ग में भी शास्त्र आदि सब बनने ही हैं; परन्तु इनसे कुछ भी फायदा नहीं होता, और ही कलाएँ कमती होती हैं। अभी तुम्हारी चढ़ती कला है। सतयुग के बाद त्रेता में भी दो कलाएँ कम हो पड़ती हैं। उतरती कला हो जा(ती) है ना। अब है तुम्हारा चढ़ना, चढ़े तो चाखे वैकुण्ठ रस, गिरे तो... चढ़ना और गिरना किसको कहा जाता है, यह भी जानते हो। बाप को याद कर वर्सा लिया तो चढ़ जावेंगे

अगर छोड़ दिया तो वर्सा मिल न सके। वे भी आखिर आवेंगे ज़रूर; परन्तु पद बहुत कम पावेंगे। नम्बरवार दर्जे तो हैं ना। तुम बच्चे जानते हो हमको बाप मिला तो सब कुछ मिला। क्या मिला? तुम्हारे दिल में है हम बेहद के बाप से वर्सा पाय रहे हैं। भल जन्म माँ से लिया; पर वर्सा तो बाप से मिलना है ना। कोई भी बात को छोड़ कर वर्सा बाप से ही लेना है। बाप का मुकर्रर तन एक ही ब्रह्मा का है। बाबा ब्रह्मा द्वारा सुनाते हैं। पहले ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण ज़रूर चाहिए। ब्रह्मा है देवताओं से भी ऊँच। ब्राह्मणों को गुम कर दिया है। कलियुगी जिस्मानी ब्राह्मण ही याद है। इन ब्राह्मणों का वर्णन कहाँ है नहीं। दिखाते हैं कृष्ण भगवानुवाच्य अर्जुन प्रति। तो मूँझते हैं त्रिमूर्ति में ब्रह्मा को क्यों रखा है। वे तो दिखाते हैं कि घोड़े गाड़ी में अर्जुन को बैठ समझाया आदि–2; परन्तु ऐसी बातें हैं नहीं। कल्प की आयु भी लम्बी लिख दी है। तुमको कहते हैं शास्त्रों में कल्प की आयु इतनी है। तुम यह क्या सुनाते हो? अरे, तुम ही कहते हो क्राइस्ट से 3000 वर्ष पहले भारत स्वर्ग था। उन्हों के चित्र भी हैं ना! बरोबर उन्हों का राज्य था, फिर लाखों वर्ष की बातें कैसे हो सकती? लाखों वर्ष होते तो संख्या कितनी बढ़ जाती। एक तिल चिटकने की भी जगह न रहे, इतने मनुष्य हो जाएँ। ये तो संख्या और ही कम दिखाते हैं; क्योंकि और धर्मों में भारतवासी कनवर्ट हो गए हैं। उन्हों के रजिस्टर में देवता धर्म नाम ही नहीं है। चित्र आदि तो सब हैं। भारत प्राचीन स्वर्ग था। कोई मरते हैं तो (भी) याद करते हैं फलाना स्वर्ग में गया; परन्तु स्वर्ग जब यहाँ हो तब तो पुनर्जन्म स्वर्ग में ले(वें)। अभी तो नरक है ना। स्वर्ग स्थापन हो जावेगा फिर तुम स्वर्ग में ही पुनर्जन्म लेते रहे....। समझानी अभी तुमको मिलती है। वहाँ यह नॉलेज नहीं रहती। उस समय तो विश्व के ..... उनको ही स्वर्ग कहा जाता। यह नहीं समझेंगे कि हम स्वर्ग में हैं अथवा स्वर्गवासी हैं। अ..... हैं स्वर्ग था। अभी बदल कर नरक बना है। प्रीतम बैठ समझाते हैं, जिसको याद करते हैं कि आन मिलो, वह एक ही है, बाकी ये सब हैं भक्तियाँ। ब्राईड्स का बुद्धियोग उस ब्राइडग्रूम से लगना है। तुमको बाप ने डायरैक्शन दिया है सभी देहधारियों से बुद्धियोग तोड़ मुझ एक को याद करते रहो। वह मोस्ट बिलवेड है। यह प्रीतम कहने से बाप ही याद आते हैं। आधा कल्प तुम बच्चों ने मुझ बाप को याद किया है। निराकार को ही याद करना है, साकार को नहीं। प्रीतम कहा ही जाता है निराकार प०पि०प० को, जो हम सब आत्माओं का बाप है। जैसे हम आत्मा निराकार है वैसे बाप भी निराकार है। यह नॉलेज है ही बच्चों के लिए। बच्चे ही जानते हैं, समझते हैं। बाप भी समझाते हैं मैं इस ब्रह्मा तन से स्थापना कराय रहा हूँ। ब्राह्मण तो ज़रूर चाहिए। ज्ञान यज्ञ है ना। यज्ञ भी है और ज्ञान की पढ़ाई भी है। बरोबर बाप ने आकर रुद्र ज्ञान यज्ञ रचा है। यज्ञ में आहूति (होती) है। पढ़ाई में तो पढ़ते हैं, फिर यज्ञ कैसे! बाप समझाते हैं, इस ज्ञान यज्ञ में सारी दुनिया आहूति देगी। सबकी आहूति इनमें पड़ जावेगी, फिर कोई भी यज्ञ नहीं रचेंगे। इनको रुद्र ज्ञान यज्ञ कहते हैं; क्योंकि रुद्र आए करके ज्ञान दे रहे हैं। यज्ञ रचते हैं तो एक जगह रामायण, एक जगह गीता, एक जगह भागवत सुनाते रहते हैं। बाप भी कहते हैं मैं तुमको सभी वेदों–शास्त्रों आदि का सार सुनाय रहा हूँ। तो उन्होंने फिर कॉपी कर दी है। अब यह है रुद्र ज्ञान यज्ञ। यज्ञ में ज़रूर ब्राह्मण चाहिए, सन्यासी नहीं। वे तो निवृत्तिमार्ग वाले हैं। वे यज्ञ रच न सके। गृहस्थियों को यज्ञ रचना है, तीर्थ करना है। तुम बच्चे जानते हो, बाबा आया हुआ है सच्चे तीर्थ कराने। फिर और तरफ धक्के क्यों खावें! तुम तो बच्चे ठहरे। जानते हो, शिवबाबा आया है बेहद का वर्सा देने। वे हद का वर्सा देते। बेहद का वर्सा एक ही बाप देते हैं। भारत को वर्सा था ना। एक ही धर्म था, कोई फूट नहीं थी, फिर जब माया की प्रवेशता होती है तब दुख शुरू होता है। हम ब्राह्मणों की ही बात है। (पहले सतोप्रधान फिर सतो, रजो, तमो होना ही है।) तो बाप समझाते हैं याद एक को करना (अधूरी मुरली)